भारत की अन्तरङ्ग खोज

भारत की श्रेष्ठता, मध्य की पराधीनता, आज की दशा, भविष्य की सुआशा

(भारत कल-आज-कल)

-: b{lH$:-

dkmoH$ Y_m©Mm© l r HH§Xr 0r JéX{d

àHmeH

Y_© Xe© odkm em{Y g§ñm (]>mV)

Y_© Xe© g{dm g§ñm (CX[ )

शब्दांकन :- मुनि श्री तीर्थनंदी जी, मुनि श्री सच्चिदानंद जी

(संघस्थ आचार्य कनकनंदी जी)

_Ð$:

e oàÝQ>g©, _0â\$J

भारत की अन्तरङ्ग खोज

भारत की श्रेष्ठता, मध्य की पराधीनता, आज की दशा, भविष्य की सुआशा

(भारत : कल-आज-कल)

J«§m‰> - 156
b{lH$ - dkmoH$ Y_m©Mm© l r HH§Xr 0r JéX{d
g§ñH$U - à_ - 2006
àoVm - 1000
_yë - 10.00/- é[{
Ð ìXmVm / kmXmVm

1) हे ! विश्वगुरू-सर्वशक्तिमान् भारत अब तो पुन:परम विकसित बनो !

(भारत : कल - आज और कल)

एक बार एक सिंह शिशु अपने माता-पिता से बिछुडकर भेडों के झूण्ड में मिल गया और भेडों के जैसे व्यवहार करने लगा तथा स्वयं को भेड मानने लगा। कुछ दिनों के बाद एक बडा सिहं भेडों के झुण्ड में उस सिंह को देखकर उसे बुलाकर समझाता है कि तुम सिंह होकर भेडों के झुण्ड में रहकर उनके समान व्यवहार क्यों करते हो और में-में करते हो। यह सुनकर वह सिंह भयभीत होकर बोलता है कि नहीं-नहीं मैं तो भेड हूँ ; सिंह तो पशु-राज है , वह तो हमें खा जाता है। यह सुनकर बडा सिंह को दु:खद आश्चर्य होता है और उसे स्वस्वरूप का परिज्ञान करवाकर उसे पशु-राज बनाने के लिए एक स्वच्छ-शान्त जलाशय में ले गया तथा दोनों के प्रतिविम्ब दिखाकर गर्जना की। इससे भूले-भटके हुए सिंह को स्व-स्वरूप का परिज्ञान हुआ और उसने भी गर्जना की तथा सिंह के झूण्ड में जा मिला। ऐसी ही दशा भारत की तथा प्रत्येक जीव की है।

एक छोटा सा बरगद का बीज जिस प्रकार योग्य भूमि,जल, वायु, सूर्य-रश्मि आदि को प्राप्त करके क्रमविकास करता हुआ विशाल वृक्ष बन जाता है उसी प्रकार भारत के प्रत्येक जीवों के लिए भी हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता की खोज नहीं कर पाने के कारण तथा समुद्र पार करने में स्वयं को असमर्थ पाकर हनुमान हीन भावना से ग्रसित होकर समाधि लेकर प्राणत्याग करना चाह रहे थे। जाम्बवान ने उन्हें समझाया कि आप के पास अपार शक्ति है परन्तु अभिशाप के कारण वह शक्ति सुप्त है, गुप्त है,उस शक्ति का स्मरण करो जिस से वह जागृत हो जायेगी। हनुमान (अणुमान= अणु+महान्) ने उसी प्रकार स्मरण /ध्यान करके शक्ति की अभिव्यक्ति करके समुद्र लांघकर सीता की खोज की, लंका दहन किया और वापिस समुद्र लांघकर श्रीराम के पास आकर समस्त वृतान्त कह सुनाया। उसके अनुसार श्रीराम-लक्ष्मण सहयोगी मित्र सेना सहित लंका में प्रवेश करके रावण को मारकर सीता का उद्धार करते हैं। इसी प्रकार भारत में तथा प्रत्येक जीव में अपार शक्ति, संभावनायें सुप्त रूप में गुप्त रूप में निहित है। महान् ज्ञानी, हितोपदेशी, मार्ग दर्शकों के निर्देशानुसार उस सुप्त-गुप्त शक्ति को प्रकट करके परम विकास के बाधक कारणों को दूर

करके सफलता/परम-विकास को प्राप्त कर सकते हैं। इस शोधपूर्ण लेख में भारत को केन्द्र करके कुछ लिख रहा हूँ। विशेष जिज्ञासु मेरी (आ.कनक नन्दी) 1) भारत को गारत तथा महान् भारत बनाने के सूत्र 2) प्रथम शोध बोध आविष्कार एवं प्रवक्ता 3) उठो ! जागो !! प्राप्त करो !!! आदि कृत्रियों का अध्ययन करना चाहिए। निम्न में प्राचीन/अतीत भारत की उपलब्धि, वर्तमान की परिस्थिति तथा भविष्य की सफलता के बारे में कुछ विचार कर रहे हैं। क्योंकि भावी सफलता अतीत के बीज से वर्तमान के पुरूषार्थ आदि रूपी वातावरण से अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित होकर प्राप्त होती है।

भारत की महानता के कारण स्वर्ग के देवों से लेकर प्राच्य-पाश्चात्य के प्राचीन एवं अर्वाचीन समस्त सत्यग्राही विद्वान् भारत की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं एवं भारत की महानता के आगे नतमस्तक होते हैं। यथा-

(1) **स्वर्ग-मोक्ष की भूमि- भारत**

गायन्ति देवा: किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूय: पुरूषा: सुरत्वात्॥

(विष्णु पुराण, 2/6/24)

देवगण भी गान करते हैं कि भारत भूमि में जन्म लेने

वाले लोग धन्य हैं। स्वर्ग और अपवर्ग कल्प इस देश में देवता भी देवत्व को छोडकर मनुष्य योनि में जन्म लेना चाहते हैं।

(2) **भारत में जन्म लेना देवों के लिए भी गौरव**

अहो अमीषा किमकारिशोभनं प्रसन्न एषां स्विदतु स्वयं हरि:।
यैर्जन्म लब्धं नृष भारताजिरे मुकुन्द सैवोपायिकं स्पृहा हिन: ॥

(श्री मत्भागवत, 5/19/21)

देवता भारतीय मनुष्यों के सौभाग्य पर ईर्ष्या करते हुए कहते हैं- अहो ! इन लोगों ने जाने ऐसे कौन से शुभ कर्म किये जिनके फलस्वरूप इन्हें भारत भूमि के प्रांगण में मानव जन्म सुलभ हुआ है। लगता है,भगवान् स्वयं इन पर प्रसन्न हो गये थे। भगवान् की सेवा के योग्य ऐसा जन्म पाने की इच्छा तो हमारी भी होती है। इस से सिद्ध होता है कि भारत वर्ष इतना महान् है, जिससे देव भी इस देश में जन्म लेने के लिए लालायित रहते हैं। यह देश इसीलिए महान् हुआ है कि इस भू भाग में महान् आध्यात्मिक, राजनैतिक, विभूतियों ने जन्म लिया।

(3) **विश्व भरण पोषक: भारत**

विश्व भरण पोषण कर जोई। ताका नाम भारत अस होई॥

(संत तुलसीदास)

(4) गणित के शिक्षक भारत-हम भारत के बहुत ऋणी हैं, जिसने हमें गिनती सिखायी जिसके बिना कोई भी सार्थक वैज्ञानिक खोज संभव नहीं हो पाती। (अलबर्ट आइंस्टीन)

(5) **स्वप्न के साकार का स्थान: भारत**- मानव ने आदिकाल से जो सपने देखने शुरू किये उनके साकार होने का इस धरती पर कोई स्थान है तो वह है भारत। (फ्रांसीसी विद्वान् रोमां रोलां)

(6) **महानता का गुरू :भारत**- हमारे आक्रमण, उदण्डता, लूटपाट के बदले भारत हमें सिखायेगा सहिष्णुता और परिपक्व मन की मृदुता और अजेय आत्मा का निश्चल संतोष, सामंजस्य भावना की शीतलता तथा सभी प्राणीमात्र से एक रूपता युक्त शांतिप्रद स्नेह। (बिल ड्यूरांट)

आर्यसंस्कृति की रही यही पहिचान।
जीवन में है ज्योति और मरने पर निर्वाण॥

आधुनिक कुछ इतिहासकारों की मान्यता है कि 10,000 साल के इतिहास में भारत ने पहले किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। 17 वीं शताब्दी में अंग्रेजों के शासन से पहले तक भारत दुनिया का सबसे अमीर देश था। जिसके कारण

भी अनेक विदेशी आक्रान्ताओं ने ,लूटेरों ने भारत के ऊपर आक्रमण किया, परतंत्र किया, लूटा, शोषण किया, शासन किया। तथापि अभी (2006) भारत के पास जो विशाल भूखण्ड, जनशक्ति, 6 ऋतुयें, प्राकृतिक संसाधन, खनिज कच्चामाल, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान,आयुर्वेद, गणित, दर्शन, पुराण, भाषा, व्याकरण, सभ्यता, परम्परा, मन्दिर, मूर्ति, योग-ध्यान, पर्व-त्यौहार, सामाजिकता, परंपरा, तीर्थयात्रा ,साधु- संत ज्ञानी-विज्ञानी, आध्यात्मिकता ,संस्कृति, जनसंख्या, युवावर्ग, शिक्षित वर्ग आदि हैं; इसके बल पर भारत पुरूषार्थ के माध्यम से विकास शील से विकसित क्या सर्वांगीण रूप से परम विकास कर सकता है । परम विकास का अर्थ मेरे अभिप्राय से या यथार्थ से केवल भौतिक,बौद्धिक, सत्ता, सम्पत्ति,शिक्षा, भौतिक आधुनिक विज्ञान, औद्योगिक करण, टेकोँलोजी, संचार माध्यम, सूचना माध्यम आदि ही नहीं है।इसके साथ-साथ E.Q.(संवेदनशीलता) S.Q.(आध्यात्मिकता) सुख, शांति, विश्वमैत्री, विश्वप्रेम, विश्वशान्ति आदि भी है। केवल भौतिक, आर्थिक, बौद्धिक आदि विकास अन्तेत्वगत्वा विनाश के लिए ही कारण बनता है । जैसा कि रावण,कंस, मयसभ्यता, रोमन साम्रांज्य, राम- रावण युद्ध, महाभारत युद्ध, प्रथम- द्वितीय-

विश्वयुद्ध से लेकर अभी के भौतिक विकसित-भोगवादी व्यक्ति से लेकर परिवार, राष्ट्रों में हो रहा है। परन्तु भारत में सर्वांगीण परम विकास के लिए; विविधता के साथ-साथ विविधता में एकता/समन्वय स्थापना के लिए अनेक प्राचीन एवं आधुनिक तत्त्व/कारक हैं। यथा-

विश्व की सम्पूर्ण सभ्यता, संस्कृति, भाषा, ज्ञान-विज्ञान, खोज,आविष्कार, संस्कार ,आध्यात्मिकता आदि के जनक,पोषक, संरक्षक, प्रचार-प्रसार, संबर्द्धक तो मानव है; यह वैज्ञानिक मत है, धार्मिक सिद्धान्त है, प्रत्यक्ष प्रायोगिक सिद्ध सिद्धान्त है, इतिहास-पुराण साक्षी है। इस दृष्टि से भारत की विविध विधा की 1 ¼ अरब जनसंख्या, 325 भाषायें, 1652 बोलियाँ तथा पृथ्वी में सबसे ज्यादा अंग्रेजी बोलने वाले भारतीय हैं। इसके साथ-साथ 250 यूनिवर्सिटी, 1,5000 रिसर्च इंस्टीटयूट, 100 428 हायर एजुकेशन इंस्टीटयूट, हर वर्ष 2 लाख इंजीनियरिंग ग्रेजुएट्स, 3 लाख तकनीकी रूप से प्रशिक्षित ग्रेजुएट्स और 20 लाख अन्य स्नातक निकलते हैं। 1970-80 में 44% 1980-90 में 52% Am1990-2000 में 65% साक्षर हुए हैं तो औसतन आयु क्रमश: तीनों दशक में 56 साल,60 साल, 69

साल हुई हैं। इसके साथ-साथ विभिन्न धर्म के धार्मिक पाठशाला से लेकर गुरूकुल, शोध संस्थान, धार्मिक पत्रिकाओं से लेकर धार्मिक उच्च कोटी के शोधपूर्ण ग्रन्थ, सामान्य धर्मावलम्बी से लेकर धार्मिक उच्च कोटी के विद्वान्,साधु-संत, आचार्य, धार्मिक प्रवचन, शिविर से लेकर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम, संगोष्टी, योग-आयुर्वेद -ध्यान के प्रशिक्षण शिविर से लेकर प्रचार-प्रसार देश-विदेश में हो रहे हैं। यह सब भारत की पृथ्वी की सब से अधिक मानवीय बौद्धिक शैक्षणीक- आध्यात्मिक शक्ति हैं जो कि सम्पूर्ण शक्ति, विकास, सफलता के प्रथम तथा प्रधान तत्त्व हैं। इसलिए तो आज भारत वैज्ञानिकों और इंजीनियर्स का पृथ्वी में दूसरा सबसे बडा गढ है। अमेरिका के 60 % डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक भारतीय है। भारत के 30 करोड मध्यम वर्ग के रूप में अमेरिका की कुल आबादी (29 करोड) से भी बडा बाजार देखकर विदेश की सरकार एवं कंपनियाँ भारत की और लालसा से खींचकर आ रही हैं। अमेरिका की सिलिकॉन बैली में 1.25 लाख आईटी प्रोफेशनल हैं जबकि बैंगलूर में 1.5लाख हैं।

पिछले 15 वर्षों से 6% से अधिक औसत वृद्धि दर के साथ भारत चीन के बाद दूसरी सब से तेजी से बढती अर्थव्यवस्था

रहा है। यह दर बढकर 8%हो गई है; लक्ष्य 10% का है। भारत का जी.डी.पी. 576 अरब डॉलर, वृद्धि दर 8.1 % है। जी.डी.पी .2016 तक इटली को 2019 तक फ्रांस, 2022 तक ब्रिटेन, 2023 तक जर्मनी, 2032 तक जापान को पछाड देगा तथा 2040 तक भारत पृथ्वी की तीसरी सबसे बडी आर्थिक शक्ति बनेगा। 2008 तक आईटी इंडस्ट्री से भारत का राजस्व 87 अरब डॉलर पहुंचने की आशा है। देश की कम्पनियों के विकास में हर साल 15,20,25 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है। 2050 तक जापान से 5 गुणा बढ जायेगी और प्रतिव्यक्ति आय वर्तमान स्तर (34 रूपये) से 35 गुना बढ जायेगी। गरीबी 1970-80 में 44%, 80-90 में 36% ,90-2000 में 26% रह गई । 5 साल में 100 मल्टीनेशनल कम्पनियाँ भारत आई हैं। भारतीय दवा कम्पनी रैनबैकसी का एक अरब में से 70 करोड डॉलर का कारोबार विदेशों में है तो हीरो होंडा मोटर साईकिलों का सबसे बडा निर्माता है और ट्रेक्टर्स में नम्बर दो पर है। पृथ्वी में बिकने वाले 90% हीरे भारत से गुजरते हैं। पिछले 5 वर्षों में भारत का सबसे सेंक्स 148% बढा है जब कि अमेरिका का स्टाक मार्केट केवल 6% gA125 से ज्यादा फार्चुन 500 कम्पनियाँ भारतीय

मेधा का प्रयोग करने यहाँ आ चुकी हैं। 2006 में पृथ्वी भर के अरबपतियों की संख्या 793 है जो कि पिछले साल के मुकाबले 102 ज्यादा है। इनमें 78 महिलाएँ हैं। अमेरिका के बाद इस तेजी में भारत का स्थान है जिसने साल भर में 10 नये अरबपति दिये। इन अरबपतियों में लक्ष्मी निवास मित्तल 5 वें (23.5 अ.डा.) अजीम प्रेमजी 25 वें (11अ.डा.) स्थान पर है, मुकेश तथा अनील अम्बानी क्रमश: 7, 5.7 (अ.डा.) से लेकर ऐसे 100 भारतीयों के पास 100 अ. डा. से ज्यादा है।

अमेरिका ने सुपर कम्प्यूटर की तकनीकी नहीं देने पर भी भारत ने इसे बनाकर सिद्ध कर दिया कि हम किसी से पीछे नहीं है। यह कम्प्यूटर केवल अमेरिका एवं जापान के पास है , सेटलाईट लांचिग क्षमता वाले 6 देशों में भारत भी शुमार है, हावर्ड,एम आईटी और पिंसटन युनिवर्सिटी को मिला दे तो शायद वे आई आईटी के बराबर बैठें। अमेरिका में सब से प्रभावशाली भारतीयों में कॉमन गुण ये है कि वे आई आईटी ग्रेजुएट हैं। अमेरिका भारत से बुद्धिमान व तेजतरार्ट लोग आयात करता है, आई आईटी आज पृथ्वी के तीन सर्वश्रेष्ट शिक्षण संस्थाओं में से एक है। भारत के प्राय: $^2/_3$ बच्चे प्राईवेट स्कूल में पढतें हैं। भारत की 70%

जनसंख्या युवा है। भारत का क्षेत्र फल 3,247,590 वर्ग k.m. है तो अमेरिका का 9,631,418 वर्ग k.m. है, भारत की मुद्रा स्फीति(उपभोक्ता मूल्य) 4.4% है तो अमेरिका की 3.2% है। क्रमश: दोनों देश के औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर 8.2% एवं 3.2%है। भारतीय सेना में 15लाख सैनिक हैं जो कि पृथ्वी की तीसरी सब से बडी सेना है। भारत की रेल सेवा पृथ्वी की सब से बडी रेल सेवा है। हमारे देश में प्रति वर्ष 5 हजार पी.एच.डी. करते हैं। हिन्दुस्थान लीवर प्रति वर्ष विज्ञापन पर 400 करोड रूपये व्यय करता है।

भारत के अन्धकार पक्ष

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्ययापिहितं मुखम्।
त्वं पूषन्नापावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। ईशा.उप.

इस उपनिषद् के श्लोक में अनेक रहस्य अन्तर्निहित हैं। इस का एक रहस्यात्मक अर्थ यह भी ध्वनित होता है कि सुवर्ण रूपी पात्र से सत्य का मुख ढका हुआ है। अत: सत्य धर्म के दर्शन के लिए उस ढक्कन को निकालो। इस का भावार्थ यह है कि बाह्यावरण से यथार्थता आवृत रहती है। निरावरण सत्य/नग्नसत्य/ यथार्थ सत्य का दर्शन, ज्ञान तथा उपलब्धि तब तक नहीं होगी जब

तक आवरण रहेगा ।यह आवरण अनेक प्रकार के हैं। यथा मोह, अज्ञान, क्रोध मान, माया, लोभ,काम, भय, घृणा, मिथ्या परम्परा, रूढिवाद, पंथवाद, पक्षपात, पूर्वाग्रह, हठाग्रह, संकीर्णता, भ्रष्टाचार, दिखावा, द्ररिद्रता, फैशन, व्यसन, स्वार्थपरता, आलस्य आदि। जिस प्रकार भगवान् की मूर्ति बहुमूल्य सुवर्ण के पात्र से भी ढकी हुई है तो मूर्ति का दर्शन नहीं होता है। उसी प्रकार प्राचीन या बहुमूल्य परंपरा पक्षपातादि से आवृत सत्य का दर्शन नहीं होता है। भगवान् की मूर्ति के दर्शन का इच्छुक जिस प्रकार सुवर्ण के पात्र को हटाकर मूर्ति का दर्शन करता है उसी प्रकार सत्य-ग्राही भी सत्य के ऊपर पडे हुए समस्त आवरण को हटाने के लिए सतत् प्रयत्नशील होता है। क्योंकि सत्य की उपलब्धि ही सर्वोत्तम/ अतुलनीय/अमूल्य उपलब्धि है। श्लोक में निहित रहस्यानुसार यदि हम प्रकृत विषय की समालोचना करगें तो हमे परिज्ञान होगा कि उपर्युक्त भौतिक,शैक्षणिक, बौद्धिक,चकाचोंध रूपी सुवर्ण पात्र से और कुछ अग्रलिखित-अन्धकार -पूर्ण सत्य- तथ्य ढके हुए हैं। यथा-अभी भी भारत स्वास्थ्य, साक्षरता, आमदनी जैसे मुद्दो पर पृथ्वी के 124 वाँ स्थान पर है तो भ्रष्टाचार,फैशन-व्यसन, अश्लीलता, गन्दगी, मिलावट, नकलची, भ्रष्टनेता, अन्धा

कानून, दगाबाज, नौकर शाही, रक्षक के नाम पर भक्षक पुलिस, जनसंख्या, कन्या शिशु हत्या , पशुवध, पशु क्रूरता आदि की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने की प्रतिस्पर्द्धा में सबसे आगे है। सुवर्ण पात्र में अमृत होने पर भी यदि उस पात्र में अनेक छेद हैं तो वह पात्र अमृत से रिक्त हो जायेगा उसी प्रकार व्यक्ति से लेकर राष्ट्र एवं विश्वरूपी पात्र में अच्छे गुणरूपी अमृत है परन्तु कमी एवं दोष रूपी छेद हैं तो धीरे-धीरे गुण रूपी अमृत से रिक्त हो जायेगें और गुणरूपी अमृत पान से जो सुख, समृद्धि, परम विकासरूपी अमरत्व प्राप्त होने वाला है उससे वंचित हो जायेगें। ऐसी ही द्वंद्वात्मक, समस्यापूर्ण परिस्थिति प्रत्येक जीव से लेकर भारत एवं विश्व की है। इस सम्बन्धी कुछ वर्णन निम्नोक्त है-

भारत के धनी लोगों के 50 लाख करोडों रूपये स्विस बैंक में जमा है जिस राशि से भारत विदेशी ऋण (18 लाख करोडों)से मुक्त हो कर (50-18=32 लाख करोड) विकास कार्य के लिए 32 लाख करोड रूपये बच जायेगें, जिससे भारत के 65% लोगों की आय एकलाख रूपये वार्षिक से भी कम है उस आय में वृद्धि होगी । भारत की और विषमता पूर्ण दु:खद विडम्बना यह है कि जिस देश के एक व्यक्ति की एक दिन की औसत

आमदनी 34 रूपये हैं उस देश के भ्रष्ट, अश्लील हीरो-हीरोईन (जीरो-जीरोईन) की प्रतिदिन की आय-हेमा मालिनी =एक लाख रूपये, किरण खेर =40 हजार, स्मृति ईरानी=40 हजार, शेखर सुमन= 75हजार से 1 लाख, अमर उपाध्याय 30से 35 हजार तथा और कुछ के तो इससे भी अधिक है। इतना ही नहीं भ्रष्टाचार से धन कमाने वाले, विदेशी बैंक में धन जमा करने वाले धनबली, बाहुबली, सत्ताबली वाले (नेता-अभिनेता,खलनेता, खेलनेता, नौकरशाह, पूंजीपति आदि) आयकर, किराया, अधीनस्य कर्मचारी की वेतन से लेकर दुकानदारों के बकाया भी नहीं देते हैं- तथापि इन्हें देश के शान -मान-अभिमान, पहिचान चेहरा, चेहेता, आदर्श, पूजनीय माना जाता,पूजा जाता है। भारत में आयकर 2.5% देने वाले हैं तो विकासशील में 82%हैं ।''वसुधैव कुटुम्कम्'' ''जियो और जिने दो'' अहिंसा परमो धर्म ''सत्यमेव जयते'' आदि महान्, वैश्विक, उदारवादी सिद्धान्त वाले देश में निर्दोष, उपकारी, पर्यावरण सुरक्षक, गोवंश, पशु-पक्षी, मछली आदि की हत्या करोडों में रोज सरकार कानूनत: करती है तथा करवाती है तो कुछ लोग धर्म के नाम पर करते हैं। इतना ही नहीं घर-घर को , चिकित्सालय को यहाँ तक की माता के गर्भ को भी

क्रूर बधशाला बनाये हुए हैं । पिछले 20 सालों में 1करोड कन्या भ्रूणों की हत्या हो चुकी है। और यह हत्या अधिकतर शिक्षित, सम्पन्न, नगर एवं तथा कथित धार्मिक- अहिंसक महिला, व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रदेश में होती हैं। पृथ्वी के ज्यादातर राष्ट्रों में स्त्री-पुरूष अनुपात 105:100 है यानि लडकियों की संख्या ज्यादा है परन्तु भारत में 1981 में लडके लडकियों का अनुपात 1000: 962 तो 1991 में 1000:945 और 2001में 1000:927 है। 1997 में प्राकृतिक लिंगानुपात के अनुसार 1 करोड 36 लाख लडकियों का जन्म होना था परन्तु जन्म हुआ 1करोड 31लाख । भारत में 1/70 बलात्कार का मामला दर्ज होता है। आधे से अधिक पीडिताएं 20 वर्ष से कम आयु की है। 2005 में जारी दिल्ली पुलिस के आकंडे के अनुसार 90% बलात्कार परिचित व्यक्तियों के द्वारा किये जाते हैं। हर 26 वें मिनट में एक स्त्री से छेडछाड, हर 42 वें मिनट में एक यौन उत्पीडन, हर 93 वें मिनट में एक स्त्री की हत्या होती है। यह केवल दर्ज किए मामलों के आधार पर निकाले गए अकडे हैं। यथार्थ आकंडे तो और भी अधिक घृणित हैं।

संक्षिप्ततः कहा जाये तो भारत की जो कुछ भौतिक,

बौद्धिक, शैक्षणिक आदि विकास है उसके मूल में शोषण, भ्रष्टाचार, हिंसा, मिलावट, चोरी, बेईमानी, धोकाधडी आदि भी निहित है। प्रकारान्तर से कहा जावे तो भारत (ग्रामीण, अशिक्षित, कृषक, गरीब, दीन-हीन, मजदूर, शोषित) की कीमत पर इंडिया (नगरीय, शिक्षित, नेता, अभिनेता, खलनेता, खेलनेता, पूंजीपति, नोकरशाही, शोषणकारी, घोटालाबाज) की तरक्की है। ऐसे नैतिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय, सामूदायिक पतन सहित विकास वस्तुतः विनाश का सूत्रपात्र है। इसलिए ऐसे विकास में उपर्युक्त भारतीय शाश्वतिक मूल्यों का समावेश होने पर ही केवल भारत का परम विकास नहीं होगा परन्तु विश्व का भी होगा।

आस्ट्रेलिया पर्यावरणविद् टामॅ हेंस ने भारतीयों को आह्वान करते हुए कहा कि -तुम हमें ज्ञान दो हम तुम्हें विकास देगें। क्योंकि भारत के पास प्राचीन ज्ञान का जो अमूल्य भंडार है उसकी बदौलत वह टिकाऊ विकास के पथ पर सबसे आगे बढ सकता है। आधुनिक विज्ञान के पास वह तकनीक नहीं जो किसी को टिकाऊ विकास के मार्ग पर ले जाए । भारत अपने प्राचीन ज्ञान के बल पर व्यवस्थित व वैज्ञानिक विकास प्राप्त कर सकता है जो ज्ञान संसार में और कहीं नहीं हैं । पश्चिमी देश के नागरिक उतने संवेद शील नहीं है

जितना कि भारतीय जीवन -मूल्य,संस्कृति में प्रकृति-रची-बसी है। इस विषय में मैंने 1) विविध क्रम विकासवाद एवं परमविकासवाद 2) प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय शिक्षा 3) पर्यावरण सुरक्षा के प्रायोगिक रूप जैन श्रमण 4) परशोषणाश्रित नश्वर वैभव तथा स्वपोषणाश्रित शाश्वतिक वैभव आदि लेख एवं साहित्यों में किया है । वहाँ से अध्ययन करें।

टॉम हेंस के उपर्युक्त कथन से और भी कुछ रहस्य उद्घाटित होते हैं कि भारतीय अपने प्राचीन ज्ञान का सदुपयोग नहीं कर पाते हैं जिससे भारत का विकास नहीं हुआ है। भारत से वे ज्ञान लेगें और वे भारत को विकास देगें अर्थात् भारतीय लोग अपने प्राचीन ज्ञान को प्रायोगिक करण नहीं कर पाते हैं परन्तु उसका प्रायोगिक करण विदेशी करते हैं। इससे यह फलितार्थ निकलता है कि भारतीय अपने प्राचीन ज्ञान को न जानते हैं न उपयोग में लाते हैं। जब विदेशी के लोग उसको अपनाते हैं तब भारत के लोग उनकी नकल करते हैं। यथा-योगा (योग-ध्यान) आयुर्वेद, हर्बल (प्राकृतिक प्रसाधन सामग्री) शाकाहार, पर्यावरण सुरक्षा, विश्वशांति, विश्वमैत्री, सापेक्ष- सिद्धान्त, अणु- सिद्धान्त, संगठन, सहयोग, समन्वय, भाषा,भोजन, वेश-भूषा, रहन-सहन,

शिक्षा, विज्ञान, गणित, इतिहास, प्राचीनता, राजनीति, कानून, जीवदया, पशु क्रूरता निवारण, मानवाधिकार, महिलाधिकार, शिशु कल्याण, भृण हत्या निषेध, सेवा (चेरेट्री,क्लब) N.c.c. स्काउट, रेड क्रास, पुरस्कार प्रदान, शिक्षा नीति आदि आदि। भले यह सब या इससे भी अधिक भारत में प्राचीन काल में प्रायोगिक रूप में प्रचलन में था और अभी भी प्राचीन ग्रन्थ में लिखित रूप में है। अभी भी अनेक विषय जो भारतीय प्राचीन ग्रन्थ में हैं परन्तु उसे विदेश के लोग नहीं मानते हैं, नहीं अपनाते हैं तो उस को अधिकांशतः भारत के लोग भी नहीं मानते हैं; नहीं अपनाते हैं, नहीं पढते हैं, नहीं पढाते हैं। यथा-जैन धर्म के अलौकिक गणित, परम विकासवाद, वस्तु व्यवस्था, जीव के गुणधर्म, पौद्गलिक 23 वर्गणा,4 स्थावर जीव, प्रकाश सिद्धान्त, गति सिद्धान्त, ब्रह्माण्ड में अन्यत्र स्थित जीव आदि । इस सम्बन्धी सविस्तार वर्णन मैंने मेरी 1) विश्व विज्ञान रहस्य 2) ब्रह्माण्डीय जैविक भौतिक एवं रसायन विज्ञान 3) अनन्त शक्ति सम्पन्न परमाणु से लेकर परमात्मा आदि पुस्तको में किया है। मेरी भावना है कि केवल भारत ही नहीं विश्व भी परम विकास के लिए सत्य-तथ्य पूर्ण भारतीय प्राचीन ज्ञान विज्ञान को जाने-माने- अपनायें।

2) ढह रही है भारतीय संस्कृति सम्बन्धी भ्रांत धारणायें

(देश-विदेश की आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से)

भारत एक प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का देश होने के साथ-साथ पृथ्वी के सबसे अधिक लिखित साहित्य, शिलालेख, मंदिर, स्तूप, भग्नावशेष आदि भारत में होने पर भी विदेशी लेखक आदि के सत्य-असत्य, भ्रामक, अपमानजनक विषयों को निम्न शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा में पढते-पढाते हैं। जिन्हें सत्य-असत्य आदि की भी जानकारी है ऐसे विद्यार्थी से लेकर शिक्षक, लेखक, सरकार, न्यायालय, शिक्षा अनुसंधान केंद्र तक संशोधन करने में असमर्थ हैं। विद्यार्थी पुस्तक में वर्णित असत्य विषय से विपरीत सत्य विषयों को प्रस्तुत करता है तो उसके अङ्क काट दिये जाते हैं। शिक्षक भी यदि सत्य विषय पढाता है उसे भी समस्याओं को झेलना पडता है। इसी प्रकार लेखक, सरकार, न्यायालय से लेकर शिक्षा अनुसंधान केंद्र में भी कुछ सही दिशा में प्रयास होता है तो उसका भी विरोध अन्य प्रतिपक्षी, लेखक, राजनैतिक पार्टी आदि करके सही प्रयास को भी विफल बना देते हैं। इसके कारण 'भारतीय आर्य' 'संस्कृति,' सभ्यता,

भाषा, महापुरुष आदि के बारे में यद्वा-तद्वा, अनर्गल, अपमानजनक विषय भी पढते-पढाते हैं, भाषण में बोलते हैं, टी.वी., सिनेमा, समाचार पत्र में प्रचार-प्रसारित करते हैं।

भारत की संस्कृति को 5000 वर्ष प्राचीन मानना, बाहर से आर्यों का आगमन, आर्यों के आगमन से पहले यहाँ के निवासी अनार्य (द्राविड, म्लेच्छ, असभ्य) थे, वास्कोडिगामा (कोलम्बस) ने भारत की खोज की, दुष्यन्त शकुन्तला के पुत्र के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पडा, अकबर महान् आदि ऐतिहासिक गलतियाँ हैं। उपर्युक्त भ्रान्तियों के लिए कारण हैं - 1) कुछ ईर्ष्यालु विदेशीयों के द्वारा भारतीय सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, महापुरुषों को अर्वाचीन, नीच, तुच्छ सिद्ध करना 2) भारतीयों की मानसिक परतंत्रता, हीन भावना, सत्य जिज्ञासा की कमी, विदेशियों के प्रति अंधश्रद्धा, स्व-संस्कृति, महापुरुष, ज्ञान-विज्ञान की अज्ञता, सत्साहस एवं सत्पुरुषार्थ की कमी आदि। परंतु 'सत्यमेव जयते' 'सांच को आंच नहीं' 'सत्य के दरबार में देर है अन्धेर नहीं' के अनुसार अभी देश-विदेश के सत्यनिष्ठ, सत्य जिज्ञासु, सत्य खोजी वैज्ञानिकों के कारण उपर्युक्त भ्रांतियाँ ढह रही हैं। इसे कुछ देश-विदेश के वैज्ञानिक शोध-बोध से इस

शोध लेख में मैं (आ. कनकनंदी) यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहा हूँ। नासा से एक रिपोर्ट इसरो के माध्यम से 2002 में मेरे पास आया है जिसमें सेटलाइट के माध्यम से लिए गये 4 रंगीन फोटो भी हैं। वह रिपोर्ट का कुछ अंश निम्न में दे रहा हूँ -

NASA satellite images reveal ancient bridge between India and Sri Lanka.

For thousand. of years facts have been growing into legends, the legends into myths, which have handed over orally through generations of bards and wandering mendicants.

The idea that legend of Ramayana has its foundation in actual events is gaining ground, putting the ancient Indian civilization on the forefront.

Space images taken by NASA reveal a mysterious ancient bridge in the Palk Strait between India and Sri Lanka. The recently discovered bridge currently named as Adam's Bridge is made of chain of shoals and is 30 km long.

The bridge's unique curvature and composition by age reveals that it is man made. Archeologi-

cal studies reveal that the first signs of human inhabitants in Sri Lanka date back to about 1,750,000 years ago which is almost same as the bridge's age

In the epic Ramayana, there is a mention about a bridge, which was built between Ramesbwaram and Srilankan coast under the supervision of Rama.Earlier, archeological evidence had surfaced about the existence of the historic city of Dwaraka, ruled by another Hindu God Krishna.

The whole coast of western India sank by nearly 40 feet around 1500 BC.

Excavations at Dwaraka that began in 1981 helped add credence to the legend of Krishna and the Mahabharat war. The foundation of boulders on which the city's walls were erected proves that the land was reclaimed from the sea about 3,600 years ago.

खंभात की खाडी में इसरो की अद्भुत खोज, 2 लाख वर्ष पहले मानव बस्ती होने के सबूत - तीन हजार वर्ग कि.मी. में फैली खंभात की

खाडी की जगह 10,000 साल पहले इन्सानों की विशाल बस्ती आबाद थी। इसरो ने समुद्र के भीतर 20 मीटर गहराई में दो शहर ढूंढ निकाले हैं। इनमें से एक सूरत के पास हराजी से 20 कि.मी. और दूसरा भावनगर के गोपनाथ के पास तलाजा में 20 कि.मी. की त्रिज्या में फैला हुआ है। दोनों शहरों के साथ इसरो ने एक नदी भी ढूंढ निकाली है।

सूरत के पास समुद्र में मिला शहर रेत और किचड के नीचे दबा हुआ है। तलाजा में पानी के नीचे दबे शहर के मूल स्थान की जांच आर्कियोलॉजी विभाग द्वारा की जाएगी। शहर के अवशेषों को इसरो द्वारा सेटेलाइट से ली गई तस्वीरों में स्पष्ट देखा जा सकता है। इन तस्वीरों में गुजरात की प्राचीन समृद्ध संस्कृति के सबूत भी नजर आते हैं। समुद्र विकास मंत्रालय से सम्बद्ध नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओशन टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिक पिछले कई सालों से इन शहरों की खोज कर रहे थे। अवशेषों के नमूनों की अहमदाबाद की फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी सहित अन्य संस्थानों ने पुष्टि की है। खंभात की खाडी में तीन टापू स्थित हैं। यहाँ से मिले सबूतों से यह बात साफ हो जाती है कि दो लाख साल पहले यहाँ बडी आबादी रहा करती थी। पीरम और जिलंदण बेल्ट से कई अवशेष

लगातार मिलते रहे हैं। इन दोनों शहरों की खोज से एक बात साफ हो गई है कि एक समय तीन हजार वर्ग कि.मी. में फैली उपजाऊ जमीन थी। विश्वकोष दर्शन में भी इस बात का जिक्र है कि सूरत के पास दहेज से भावनगर तक जमीनी मार्ग था। हालांकि मानव सभ्यता से भरी संस्कृति कैसे विलुप्त हुई, यह एक रहस्य बना हुआ है। जो अवशेष मिले हैं उनमें सात हजार वर्ष पुराने बैरल के आकार के छिद्र वाले मोती, नौ कि.मी. लंबी और 90 वर्ग कि.मी. रेत की दीवार मिली है। पेड की जडें और वनस्पति के पत्ते भी पाए गए हैं। 76 सेमी. पतरे की एक ब्लैड और ढेले भी मिले हैं जो 9910 से 9331 वर्ष पुराने हो सकते हैं। 40 x 3 x 24 मीटर का टैंक, पानी की टंकी की सीढी और 200 x 345 मीटर का विशाल प्लेटफॉर्म भी शहर की विशालता का सबूत देते हैं।

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को भारतीय ज्ञान-विज्ञान, भाषा, शिल्प, आयुर्वेद, दर्शन, आध्यात्मिक, गणित, खगोल-भूगोल आदि स्वयं प्रगट करते हैं। यदि भारतीय संस्कृति को केवल 5 हजार वर्ष प्राचीन मानेंगे तब उपरोक्त समस्त प्रमाण गलत सिद्ध होंगे। इसके साथ-साथ हडप्पा, मोहनजोदडो की संस्कृति को 5 हजार वर्ष प्राचीन माना जाता है और आयड की

संस्कृति को 4 हजार वर्ष प्राचीन माना जाता है। इस संस्कृति के क्रमविकास के लिए क्या समय नहीं चाहिए ? ऋगवेद को 5 हजार वर्ष प्राचीन माना जाता है तो क्या ऋगवेद में जो तथ्य निहित हैं उनके विकास के लिए क्या समय नहीं चाहिए ? इसी प्रकार पाणिनी कृत अष्टाध्यायी व्याकरण, आयुर्वेद की चरकसंहिता, सुश्रुत संहिता, गणित के लीलावती, सूर्य सिद्धान्त, जैनधर्म के प्राचीन आगम शास्त्र, बौद्ध धर्म के त्रिपिटिक आदि ग्रंथ जो ई. पू. या ईसा के समकालीन एवं ईसा के पश्चात् रचित हैं तथा उनमें निहित ज्ञान-विज्ञान, गणित, शिल्प, आयुर्वेद आदि है उसके लिए क्या समय नहीं चाहिये ? प्राचीन भारतीय मंदिर, शिल्प, वास्तु, मूर्ति, शिलालेख आदि भी जो ई. पूर्व एवं ईसा के समकालीन व पश्चात् हैं क्या उनके लिए समय नहीं चाहिए ? यदि एक सामान्य यंत्र, उपकरण से लेकर भाषा या सिद्धान्त के क्रमविकास के लिए सैकडों वर्ष चाहिए तो इतने बडे-बडे सिद्धान्त, ज्ञान-विज्ञान, शिल्प आदि के विकास के लिए क्या समय नहीं चाहिए ? इससे भी यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति न 5 हजार वर्ष प्राचीन है न 10 हजार वर्ष प्राचीन। वैसे तो भारतीय वाङ्गमय से सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति शाश्वतिक, अनादि, अनन्त है। कुछ गाणितीय

दृष्टिकोण से भी हम निम्न में विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। नारायण श्रीकृष्ण जो कि जैनधर्म के 22 वें तीर्थङ्कर नेमिनाथ के समकालीन थे उनका जन्म ईसा पूर्व 3238 वर्ष पहले हुआ था अर्थात् आज से 5243 वर्ष पहले कृष्ण का जन्म हुआ था। नमिनाथ भगवान् से पहले 20 वे तीर्थङ्कर मुनिसुव्रत भगवान् जन्म 6 लाख वर्ष पहले हुआ जिनके तीर्थकाल में सुप्रसिद्ध भगवान् रामचंद्र जी हुए। जिनके काल में सेतु बंध का निर्माण हुआ था और कृष्ण के काल में द्वारिका का निर्माण हुआ था। नेमिनाथ के पहले 21 वें तीर्थङ्कर नमिनाथ भ. का जन्म 5 लाख वर्ष पहले हुआ था । 22 वें तीर्थङ्कर नेमिनाथ के बाद 23 वे तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ का जन्म 83750 वर्ष बाद हुआ था। 24 वें तीर्थङ्कर भ. महावीर का जन्म 23 वें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ से 250 वर्ष पश्चात् हुआ था। भ. महावीर के निर्वाण हुए ही अभी 2531 वर्ष हो गये तब विचार करना चाहिए कि मुनिसुव्रत नाथ भ. के पहले जैनधर्म के 19 तीर्थङ्कर हो गये हैं जिनके जन्म का उत्तरोत्तर अंतराल काल लाखों वर्ष नहीं अरबों, खरबों, असंख्यात वर्ष है। जैनधर्मानुसार इस कल्पकाल की काल गणना निम्न प्रकार है -

एक उत्सर्पिणी या एक अवसर्पिणी = 6 काल = 1) सुषमा-

सुषमा काल 2) सुषमा काल 3) सुषमा-दुषमाकाल 4) दुषमा-सुषमाकाल 5) दुषमाकाल 6) दुषमा-दुषमाकाल

सुषमा-सुषमाकाल = 4 कोडाकोडी अद्धासागर, सुषमाकाल = 3 कोडाकोडी अद्धासागर, सुषमा-दुषमाकाल = 2 कोडाकोडी अद्धासागर, दुषमा-सुषमाकाल = 42 हजार वर्ष कम 1 कोडाकोडी अद्धासागर, दुषमाकाल = 21 हजार वर्ष, दुषमा-दुषमाकाल = 21 हजार वर्ष

वैदिक धर्मानुसार युग की गणना निम्न प्रकार है -

1) कलियुग =4,32,000 वर्ष

2) कलियुग - द्वापरयुग =8,64,000 वर्ष

3) कलियुग - त्रेतायुग =12,96,000 वर्ष

4) कलियुग-सतयुग =17,28,000 वर्ष

चारों युगों की एक चतुर्युगी - 4,32,000 वर्ष है। 71 चतुर्युगी का एक मन्वन्तर - 3067000+1728000 संध्यांश 14 मन्वन्तर तथा संध्यांश के 15 सतयुग का एक कल्प याने - कल्प वर्ष = (432×10^7 वर्ष) ÷ 4320000000

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता को सिद्ध करने के लिए उपर्युक्त ठोस सत्य-तथ्यात्मक प्रमाण के सद्भाव के कारण तथा

भारतीय संस्कृति केवल 5 - 10 हजार वर्ष की है इसे प्रमाणित करने के लिए कोई ठोस प्रमाण के अभाव से यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है। अत: कम से कम भारतीयों को अपने मन से, प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय के प्रशिक्षणों से तथा भाषणों से यह भ्रामात्मक विषय हटा देना चाहिए। भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के परिज्ञान के लिए विशेष जिज्ञासुओं को मेरी 1) विश्व इतिहास 2) युगनिर्माता भगवान् ऋषभदेव 3) भारतीय आर्य आदि कृतियों का अध्ययन करना चाहिए।

3) आधुनिक विज्ञान से भी श्रेष्ठ था प्राचीन भारतीय विज्ञान

आधुनिक विज्ञान का शुभारंभ मुख्यत: इटली के वैज्ञानिक गैलीलियो (1610ई.) के टेलीस्कोप के आविष्कार से प्रारम्भ होकर आइजक न्यूटन (1687ई.), माइक्रोस्कोप के आविष्कारक जेड जैनसन, प्राय:1100वैज्ञानिक उपकरणों के खोजी एडिसन 1877, महान् वैज्ञानिक आइंस्टीन (1879-1955) से लेकर वर्तमान में जीवन्त अनेकानेक वैज्ञानिकों के कारण केवल 400 वर्षों में विज्ञान में जो शोध-बोध-खोज, आविष्कार हुए और हो रहे हैं; उससे व्यक्ति से लेकर पृथ्वी, चिन्तन से लेकर चारित्र, राजनीति से लेकर धर्म तक प्रभावित हैं, लाभान्वित हैं। अधिकांश व्यक्तियों को परिज्ञान नहीं है किं भारत में प्राचीन काल में आधुनिक विज्ञान से भी विविध श्रेष्ठ, ज्येष्ठ विज्ञान सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक रूप में थे। परन्तु दीर्घकालीन विदेशी आक्रमण, विध्वंस आदि के कारण भारतीय प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का बहु अंश लोप हो गया। परन्तु भग्नावशेष रूप में उपलब्ध मन्दिर, मूर्ति, स्तूप, शिलालेख, विश्वविद्यालय, प्रयोगशाला आदि तथा कुछ बचे हुए प्राचीन

शास्त्र एवं परम्परा रूप से प्रचलित -शिक्षा, संस्कृति, भाषा आदि से प्राचीन भारतीय महान् ज्ञान-विज्ञान का कुछ दिग्दर्शन, प्रतिभास हो जाता है। यथा-

I प्राचीन भारतीय महान्-विज्ञान- दुनिया का पहला विश्वविद्यालय ईसा. पू. 700 में तक्षशिला में स्थापित हुआ। वहाँ विश्वभर से आये दस हजार से अधिक छात्र 60 से अधिक विषयों का अध्ययन करते थे। ईसा पू. चौथी शताब्दझी में स्थापित नालन्दा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की एक अनूठी उपलब्धि थी।

अभी उपलब्ध जैन वाङ्मय में तिलोयपण्णति, षट्खण्डागम प्राय: 2000 वर्ष प्राचीन, (धवला -जयधवला प्राय: 1200 वर्ष प्राचीन) तत्वार्थसूत्र (प्राय: दो हजार वर्ष प्राचीन) गणितसार संग्रह, गोमट्टसार, करूणानुयोग के विभिन्न ग्रंथ आदि में गणित की विभिन्न पद्धतियाँ, धाराएँ, सूत्र आदि उपलब्ध हैं। जिस में लौकिक गणित से भी श्रेष्ठ अलौकिक गणित का वर्णन है। इसमें संख्यात, से लेकर अनंत की भी गणना है। गणित, दशमलवपद्धति, शून्य, पाई आदि का आविष्कार भारत में हुआ था। ऐसा देश-विदेश के समस्त विद्वान् मानते हैं।

पाँचवी शताब्दी में आर्यभट्ट ने शून्य (0) का प्रयोग किया। आर्यभट्ट से भी हजारों वर्ष पुर्व वैदिक काल खण्ड में तथा जैनागम में शून्य का प्रयोग था। पाई का मूल्य सबसे पहले बोधायन ने आंका। उसी ने उसका सिद्धान्त परिभाषित किया, जो की 'पायथागोरियन सिद्धान्त' के नाम से जाना जाता है। बोधायन ने यह कार्य यूरोपीय गणितज्ञों से बहुत पहले ईसा. पू. 6वीं शताब्दी में किया था। 998 में ब्रह्मगुप्त हुए जिनके ग्रथों में अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, और पाई का वर्णन है। इनका ग्रंथ 1200 वर्ष पहले एक भारतीय गणितज्ञ वैज्ञानिक लेकर अरब गया और अरब से यूरोप , यूनान पहुँचा। ब्रह्मगुप्तने केवल पाई का वर्गमूल करके छोड दिया था। परन्तु भास्कराचार्य ने उसका मूल्य value 3.14166 निकाला और आधुनिक गणित के अनुसार इसका मूल्य 22/7= 3.142 हैं।

जैनाचार्य महावीर ने गणितसार संग्रह में लघुत्तम समापवर्त्तन, दीर्घतम समापवर्त्तन, अंकगणित, बीजगणित,आदि का वर्णन किया है। बीजगणित, त्रिकोणमितीय एवं कैलक्यूलस भारत की ही विश्व को देन है। श्रीधराचार्य ने 11वीं शताब्दी में वर्ग समीकरण की व्याख्या की। ग्रीक, असैर, रोमन द्वारा उपयोग

में लाये जाने वाला अधिकतम अंक 106 था; जबकि ईसा पूर्व पाँच हजार वर्ष पहले वैदिक काल में हिन्दू 10^{53} अंक तक विशिष्ट नामों के साथ प्रयोग में लाते थे। आज भी विदेशों में विशिष्ट नाम से उपयोग में किये जाने वाला अधिकतम अंक 'टेरा' (10^{12})है।

आर्यभट्ट 476 सन् गुप्तकाल में हुए और उन्होंने आर्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया । शून्य (0) का आविष्कार वर्षों पूर्व हो गया था लेकिन शून्य को लिपिबद्ध रूप में व्यापकरूप में प्रयोग आर्यभट्ट ने किया। त्रिकोणमिति में $\sin^{o}$ (थीटा) $\cos^{o}$ को भी आर्यभट्ट ने दिया। यूकिल्ड भी ज्यामिति के महान् अन्वेषक थे।

पृथ्वी गोल है जो अपनी धुरी पर परिभ्रमण करती है; इस सिद्धान्त को भी आर्यट्ट ने सिद्ध किया था। द्वितीय आर्यभट्ट 950 में हुए जिन्होंने अनेक महान् सिद्धान्त दिये। रोयल सोसायटी जो कि अभी इग्लैण्ड में हैं; ऐसी ही संस्था की स्थापना हमारे भारत में 1500 वर्ष पूर्व में हुई थी। यहाँ पर केवल विशिष्ट वैज्ञानिक ही सदस्य बन सकते थे; दूसरों के लिए स्थान नहीं था। इन्हें ही विक्रमादित्य के नवरत्न पंडित कहते हैं।

भारतीय संस्कृति में 6075 ईसा पूर्व में एक धन्वन्तरि

हुए जो कि शल्य चिकित्सा और रसायन शास्त्र के प्रवक्ता थे। उसी प्रकार अश्विनी कुमार थे जो औषध, आयुर्वेद के माध्यम से चिर यौवन रहे और एक च्यवन ऋषि थे जो वृद्ध थे; इसलिए च्यवन ऋषि को उन्होंने औषधि दी जिसके माध्यम से वृद्ध ऋषि युवक बन गये और औषधि का नाम च्यवनप्राश पड गया । इन सभी का हमारे प्राचीन ग्रंथ चरकसंहिता,आयुर्वेद में वर्णन है। इसके पश्चात् पुनर्वसु आत्रेय हुए। वे ईसा पूर्व 2800 वर्ष में हुए। उन्होंने यह सभी शिक्षा पद्धति , आयुर्वेद, शल्य चिकित्सा का वर्णन /प्रतिपादन उनके शिष्यों के लिए किया। हिपोक्रिटिश यूनानी है। इतिहासकार मानते हैं कि हिपोक्रिटिश शल्य चिकित्सा के आविष्कार हैं, परन्तु उससे भी कई हजार वर्ष पहले लिखित रूप में प्रयोग रूप में हमारे देश में शल्य चिकित्सा से लेकर अन्य प्रकार की चिकित्सा व शिक्षा थी। इस शल्स चिकित्सा का आविष्कार भी मूल ग्रंथ चरकसंहिता, वाग्भट्ट संहिता, योग रत्नाकर आदि में भी वर्णन मिलता है। वे शल्य चिकित्सा के आद्य प्रवक्ता थे। लिखित रूप में इन्होंने ग्रंथ लिखा सुश्रुत संहिता । सुश्रुत नाक, कान, गला ,आँख इन सभीकी शल्य चिकित्सा करते थे। एक स्थान से मांस काट करके अन्य स्थान में जोड देते थे। उन्होंने

शल्यचिकित्सा के 120 प्रकार के यंत्रों का आविष्कार किया था । सुश्रुत तथा समकालीन चिकित्साशास्त्रियों ने अति जटिल शल्य क्रियायें की। जैसे -सिजेरियन, मोतिया बिन्द ,अवयव प्रत्यारोपण, पथरी आदि ; यहाँ तक कि प्लास्टिक एवं मस्तिष्क शल्य क्रिया भी होती थी। उन्हें बेहोशी की दवा का भी ज्ञान था । उनके प्राचीन ग्रंथों में शरीर शास्त्र, जन्तु-वनस्पति विज्ञान, भ्रूण विज्ञान, पाचन क्रिया, चयापचय, आनुवंशिकता विज्ञान और रोग से प्रतिरक्षा का गहरा विज्ञान पाया जाता है। जैनाचार्य उग्रादित्य ने कल्याणकारक नामक एक आयुर्वेदिक ग्रंथ की रचना की है। जैनाचार्य पूज्यपाद देवनंदी ने भी आयुर्वेदिक ,व्याकरण , आध्यात्मिक ग्रंथों की रचना की है। इनके द्वारा रचित समाधितंत्र , मोक्षशास्त्र की टीका-सर्वार्थसिद्धि भी बहुत ही सारगर्भित तथा सुप्रसिद्ध है। इन्होंने आत्मा (मन) की शुद्धि के लिए इष्टोपदेश, समाधितंत्र, सर्वार्थसिद्धि की रचना की तो वचन शुद्धि के लिए जैनेन्द्र व्याकरण की रचना की तथा शरीर की शुद्धि के लिए वैद्यशास्त्र की रचना की ।

जीवक बुद्ध के चिकित्सक थे। एक सेठ की लडकी थी जिसकी उल्टी के माध्यम से अंदर की आंतें बाहर निकल गई थी।

उसे जीवक ने ऑपरेशन करके पुन: स्थापित कर दिया । हमारे भारत में पशु-पक्षी की सुरक्षा एवं चिकित्सा और पद्धति का आविष्कार हुआ था। 1882 में न्यूजीलैण्ड में जन्मे हैरोल्डगिलीज तथा उनके सहकर्मी डॉ. टी. पी. इग्लैण्ड के सर्वश्रेष्ठ प्लास्टिक सर्जन हुए।

II जैन धर्म में वर्णित वैश्विक परम विज्ञान-

विश्व एवं उसके 6 मौलिक द्रव्य :- भगवान् महावीर ने परम-आध्यात्मिक केवलज्ञान से विश्व के संपूर्ण त्रिकालवर्ती सत्य का परिज्ञान करके दिव्यध्वनि के माध्यम से कहा कि विश्व अकृत्रिम (विश्व का कोई कर्त्ता-हर्त्ता-धर्त्ता नहीं) शाश्वतिक तथा सतत् परिणमनशील है। इस विश्व के 1) जीव 2) पुद्गल (भौतिक तत्त्व) 3) धर्म 4) अधर्म 5) आकाश 6) काल ये मूलभूत द्रव्य हैं। विश्व के समान ही छहों द्रव्य भी अकृत्रिम, शाश्वतिक तथा सतत परिणमनशील है।

1) जीव द्रव्य :- चेतना (ज्ञान, दर्शन) सुख, वीर्यदि से युक्त जीव द्रव्य है। इस के मुख्य दो भेद है। 1) संसारी जीव 2) मुक्त जीव। द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से युक्त संसारी जीव है। 1) पृथ्वीकायिक 2) जलकायिक 3) अग्निकायिक 4) वायुकायिक

5) वनस्पतिकायिक आदि एकेन्द्रिय जीव हैं; शंख, केंचुआ आदि द्वि-इंद्रिय जीव; चींटी आदि त्रि-इंद्रिय जीव; मक्खी, मच्छर आदि चौइंद्रिय जीव; पशु-पक्षी, मनुष्य, देव, नारकी आदि पञ्चेंद्रिय जीव आदि सब संसारी जीव हैं। उक्त संसारी जीवों से भिन्न एवं समस्त कर्मों से रहित तथा अनंत ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य से सहित मुक्त जीव होते हैं जिनकी संख्या अनंत हैं। संसारी जीवों की संख्या मुक्त जीवों से भी अनंतगुना है।

2) पुद्गल (भौतिक तत्त्व, Matter) :- स्पर्श, रस, गंध, वर्ण से युक्त द्रव्य पुद्गल है। इस के मुख्य दो भेद हैं। यथा - 1) अणु 2) स्कंध। पुद्गल के अविभाज्य अंश को अणु कहते हैं जो किसी प्रकार के प्राकृतिक या कृत्रिम उपयों से खण्डित नहीं होता है जो कि आधुनिक विज्ञान में मान्य परमाणु से भी सूक्ष्म है। एकाधिक परमाणु के बंधन से स्कंध उत्पन्न होता है। वायु, जल, पृथ्वी, वस्त्र, बादल, सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, आकाशगंगा आदि पौद्गलिक स्कंध हैं। आधुनिक भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक पुद्गल के अंतर्गत हैं।

3) धर्म द्रव्य (Media of motion) - गतिशील जीव एवं पुद्गल को गमन करने में जो सार्वभौम रूप से उदासीनता

से सहयोगी बनता है वह धर्म द्रव्य है। आधुनिक विज्ञान के ईथर के कुछ गुणधर्म धर्म द्रव्य से मेल खाते हैं तथापि दोनों एक ही है ऐसा अभी सिद्ध नहीं हुआ।

4) अधर्मद्रव्य (Media of rest) :- धर्म द्रव्य से विपरीत जो द्रव्य स्थितिशील जीव एवं पुद्गल को स्थिर होने में सार्वभौम रूप से उदासिनता से सहयोगी बनता है वह अधर्म द्रव्य है। आधुनिक विज्ञान के केन्द्राकर्षण बल (Grevitational force) के कुछ गुणधर्म अधर्म द्रव्य से मेल खाने पर भी दोनों एक नहीं है।

5) आकाश द्रव्य (Space) :- जो सर्वव्यापि है तथा जिसमें समस्त द्रव्य अवकाश या स्थान प्राप्त करते हैं वह आकाश द्रव्य है। आकाश के जितने भाग (असंख्यात प्रदेश) में अन्य पांच द्रव्य रहते हैं उसे लोकाकाश या ब्रह्माण्ड (Universe) कहते हैं इसके अतिरिक्त भाग (अनंत प्रदेश) को प्रतिब्रह्माण्ड या अलोकाकाश (Anti-universe) कहते हैं।

6) काल द्रव्य (Time):- प्रत्येक द्रव्य के परिणमन के लिए निमित्तभूत द्रव्य काल द्रव्य है।

पुद्गल द्रव्य के अतिरिक्त अन्य पांच द्रव्य अमूर्तिक हैं

परंतु संसारी जीव कर्म परमाणु के संयोग से व्यवहारतः मूर्तिक है। जीव एवं पुद्गल को छोडकर अन्य चार द्रव्य शाश्वतिक शुद्ध ही रहते हैं।

सात तत्त्व एवं नौ पदार्थ : भगवान् महावीर ने संसार एवं मोक्ष के लिए कारणभूत सात तत्त्व एवं नौ पदार्थ का उपदेश भी दिया। यथा-

1) जीव - चेतना से युक्त द्रव्य को जीव कहते हैं।

2) अजीव - जीव के अतिरिक्त अन्य द्रव्य अजीव है।

3) आस्रव - जीव के अशुद्ध योग (मन-वचन-काय के परिस्पंदन) एवं अशुद्ध उपयोग (मोह, राग-द्वेषादि भाव) से कर्माणुओं का आत्म प्रदेशों में आगमन होना आस्रव है।

4) बंध - आस्रव के द्वारा आगत कर्माणुओं का जीव के संपूर्ण असंख्यात प्रदेश में मिल जाना बंध है।

5) संवर - आस्रव के विपरीत भाव एवं कार्य संवर है अर्थात् आस्रव का रूक जाना संवर है।

6) निर्जरा - जीव के शुभ एवं शुद्ध भाव से बंधे हुए कर्म का आंशिक रूप से जीव से पृथक् होना निर्जरा है।

7) मोक्ष - जीव के शुद्ध भाव से संपूर्ण कर्म का सर्वथा पृथक् हो

जाना मोक्ष है।

8) पुण्य – शुभभाव से कर्म का प्रशस्त रूप से परिणमन करना पुण्य है।

9) पाप – अशुभभाव से कर्म का अप्रशस्त रूप से परिणमन करना पाप है।

जीव से लेकर मोक्ष तक को सप्त तत्त्व कहते हैं और इन सप्त तत्त्व में पुण्य और पाप ये दोनों मिलाने से नव पदार्थ होते हैं।

अनेकांत एवं स्याद्वाद (सापेक्ष सिद्धान्त एवं कथन) :– भगवान् महावीर ने परम आध्यात्मिक ज्ञान से परिज्ञान करके कहा कि प्रत्येक द्रव्य अनंत गुण-पर्यायात्मक (अवस्था, परिणमन) है। अतः प्रत्येक द्रव्य को अनंत दृष्टिकोण से देखना चाहिए तथा सापेक्ष कथन करना चाहिए। कभी भी संकीर्ण, पूर्वाग्राही, हठग्राही नहीं बनना चाहिए। सर्वज्ञ के अतिरिक्त सामान्य व्यक्ति पूर्ण सत्य को नहीं जान सकता है। अतः संकिर्णतादि को छोडकर पूर्ण सत्य की उपलब्धि के लिए सत्यग्राही बनना चाहिए। स्वसत्यांश को त्यागे बिना दूसरों के भी सत्यांश को भी स्वीकार करना चाहिए।

इसी प्रकार तीर्थङ्कर महावीर ने कार्यकारण सिद्धान्त, कर्म

सिद्धान्त, चतुष्टय (चतुःआयाम) सिद्धान्त, शाकाहार, व्यसनमुक्ति, पर्यावरण सुरक्षा, ज्ञान-ज्ञेय मीमांसा, लौकिक एवं अलौकिक गणित, परम सार्वभौम क्रमविकासवाद (मार्गणास्थान, गुणस्थान) आदि आत्मा से लेकर परमात्मा, अणु से लेकर ब्रह्माण्ड, व्यक्ति से लेकर समाज, राष्ट्र-विश्व के बारे में उपदेश दिया है। उनका उपदेश किसी भी जाति या राष्ट्र के लिए न होकर संपूर्ण विश्व के लिए है।

जैन साहित्य – जैन धर्म के प्राचीन मूल ग्रंथों को आगम कहा जाता है। इसके 12 भेद हैं जिसे द्वादशाङ्ग कहते हैं। यथा - 1) आचाराङ्ग 2) सूत्रकृताङ्ग 3) स्थानाङ्ग 4) समवायाङ्ग 5) व्याख्याप्रज्ञप्ति 6) धर्मकथाङ्ग 7) उपासकाध्ययनाङ्ग 8) अंतकृताङ्ग 9) अनुत्तरौपपादिकदशाङ्ग 10) प्रश्नव्याकरणाङ्ग 11) विकापसूत्र 12) दृष्टिवादाङ्ग। 12 वें दृष्टिवादाङ्ग के पुनः पांच भेद हैं। यथा - 1) परिकर्म 2) सूत्र 3) प्रथमानुयोग 4) पूर्वगत 5) चूलीका। परिकर्म के पांच भेद पुनः हुये हैं। यथा - 1) चंद्रप्रज्ञप्ति 2) सूर्यप्रज्ञप्ति 3) मायागता 4) आकाशगता 5) रूपगता। दृष्टिवादाङ्ग के अन्तर्गत पूर्वगत के पुनरपि 14 प्रभेद हैं। यथा - 1) उत्पाद पूर्व 2) अग्रायणीपूर्व 3) वीर्यानुप्रवाद पूर्व 4) अस्ति-

नास्ति प्रवाद पूर्व 5) ज्ञानप्रवाद पूर्व 6) सत्यप्रवाद पूर्व 7) आत्मप्रवाद पूर्व 8) कर्मप्रवाद पूर्व 9) प्रत्याख्यान पूर्व 10) विद्यानुप्रवाद पूर्व 11) कल्याणवाद पूर्व 12) प्राणावाय पूर्व 13) क्रियाविशाल पूर्व 14) लोकबिंदुसार। अङ्गबाह्य श्रुत के 14 भेद हैं। यथा - 1) सामायिक 2) चतुर्विशंतिस्तव 3) वंदना 4) प्रतिक्रमण 5) वैनियक 6) कृतिकर्म 7) दशवैकालिक 8) उत्तराध्ययन 9) कल्पव्यवहार 10) कल्पाकल्प 11) महाकल्प 12) पुण्डरिक 13) महापुण्डरिक 14) निषिधिका।

प्रकारान्तर से उपर्युक्त आगम के भेद-प्रभेद को संक्षिप्ततः चार भाग में विभक्त भी किया जाता है। यथा - 1) प्रथमानुयोग 2) करणानुयोग 3) चरणानुयोग 4) द्रव्यानुयोग ।

प्रथमानुयोग – इस अनुयोग में जैन धर्म के तथा विश्व के इतिहास का वर्णन है।

करणानुयोग – इस अनुयोग में गणित, तथा गाणितीय पद्धति से भूगोल तथा खगोल का वर्णन है।

चरणानुयोग – इस अनुयोग में गृहस्थाश्रमी (श्रावक) एवं श्रमण (साधु) संबंधी आचार-विचार, आहार-विहार का वर्णन है।

द्रव्यानुयोग – इस अनुयोग में विश्व के मूलभूत छहों द्रव्यों का

वर्णन विभिन्न दृष्टिकोण से किया गया है।

द्वादशाङ्ग के पद एवं अक्षरों की संख्या :– द्वादशाङ्ग के समस्त पदों की संख्या 1128358005 हैं तथा अक्षरों की संख्या 184467,4407370,9551615 हैं। आगम की मूल भाषा प्राकृत (अर्धमागधी, शौरसेनी) है। परंतु अनेक जैनाचार्यों ने संस्कृत, कन्नड, तामिल, गुजराती, हिंदी आदि भाषाओं में विभिन्न ग्रंथ एवं टीकाओं की रचना की हैं। इतना ही नहीं जैन सिद्धान्तों को देश-विदेश में प्रचारित करने के लिए अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में प्राचीन जैन साहित्यों के अनुवाद एवं नवीन कृतियों की रचना हुई हैं और हो रही हैं। आगम अभी संपूर्णतः मूलरूप में उपलब्ध नहीं है।

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के कारण अभी भारतीय प्राचीन विज्ञान के शोध-बोध आविष्कार, खोज, प्रायोगिक-करण के स्वर्णित अवसर है। संभवत: ऐसा अवसर भ. महावीर, महात्मा बुद्ध,सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, प्रियदर्शी अशोक के बाद आया है। अभी तो वैज्ञानिकों ने भी भारतीय आयुर्वेद, अहिंसा, शाकाहार, परोपकार, पवित्र भावना , योगासन , ध्यान आादि व्यावहारिक पक्ष को भी वैज्ञानिक दृष्टि से भी श्रेष्ठ मानरहे हैं, स्वीकार कर रहे

हैं, स्व-पर विश्व कल्याण -कारी रूप में सिद्ध कर रहे हैं। परन्तु खेद का विषय यह है कि अभी भी भारतीयों में व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान के प्रति उतना विश्वास, आदर, गौरव, अध्ययन-अध्यापन, शोध-बोध, आविष्कार, खोज, प्रायोगिक करण नहीं है जितना कि विदेशी वैज्ञानिक , विवेकी, प्रगतिशील, उदारवादी लोग में है। हाँ; विदेश के लोग जब भारतीय ज्ञान-विज्ञान को अपनातें हैं तब भारत के अनेक लोग स्वयं को आधुनिक, प्रगतिशील रूप में सिद्ध करने के लिए दीखावा के रूप में, फैसन के तौरपर ,स्टेटस्‌सिम्बल के लिए अन्धानुकरण करते हैं। इन सब मनोवृत्ति एवं प्रवृत्ति को छोडकर उदार, सत्यग्राही, प्रगकतशील मनोवृत्ति से स्व-पर-विश्व कल्याण की प्रवृत्ति से भारतीय महान् ज्ञान-विज्ञान को व्यक्ति से लेकर शिक्षा विभाग, धार्मिकजन, सरकार, कानून, राष्ट्र को स्वीकार करना चाहिए। यह समय की मांग है, विश्व की आवश्यकता है, भारत का गौरव है, विकास का मार्ग है, सुख-शांति के उपाय हैं ।

4) *क्या महान् आध्यात्मिक-सांस्कृतिक भारत आज भी महान् है? हाँ कम, ना अधिक !*

भारत अत्यंत ही प्राचीन काल से परम आध्यात्मिक-सांस्कृतिक देश रहा है। हमारे महापुरूषों ने विश्व के सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्येष्ठ आत्मा के परम विकास के लिए जिस विद्या/शिक्षा/पद्धति का शोध-बोध-खोज-अविष्कार-प्रचार-प्रसार-प्रयोग किया वह है आध्यात्मिक-संस्कृति। इसलिए भारत को 'विश्वगुरु' स्वर्ग से भी महान् कहा गया। हमारे पास जो ऐसी सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा, विरासत, धरोहर, ग्रंथ, विद्या है तथा आधुनिक युग की उपलब्धियाँ, सच्चाइयाँ-अच्छाइयाँ हैं इसके अनुपात से विचार करने पर, तुलना करने पर आज का भारत महान् कम है, अमहान् अधिक है। आध्यात्मिक संस्कृति के उच्चतम महल के शिखर तक पहुँचने के लिए सभ्यता, करुणा, भद्रता, शिष्ठता, नैतिकता, पवित्रता, धार्मिकता आदि सोपानों का आरोहण करते हुए पार करना आवश्यक है। निम्न सोपानों को पार किए बिना उच्च सोपानों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। जिस प्रकार कि वृक्ष अंकुर अवस्था को पार करके वृक्ष बनता है,

शीशु बाल्यावस्थादि पार कर के प्रौढ बनता है उसी प्रकार आध्यात्मिक संस्कृति सभ्यता आदि को पार करके आध्यात्मिक संस्कृति बनती है। उपर्युक्त दृष्टिकोण से देखने पर भारत जैसे महान् आध्यात्मिक राष्ट्र में भी सभ्यता, भद्रता, शिष्ठता, नैतिकता, पवित्रता, धार्मिकता प्रायोगिक रूप से कम पाई जाती है तो आध्यातिमकता तो और भी जघन्य से जघन्य पाई जाती है। निम्न में कुछ सविस्तार वर्णन कर रहा हूँ। विशेष वर्णन मैंने (आचार्य कनकनंदी) 1) धर्म दर्शन एवं विज्ञान 2) संस्कृति की विकृति 3) भारत को गारत तथा महान् भारत बनाने के सूत्र 4) भारत के सर्वोदय के उपाय आदि कृति में किया है। विशेष जिज्ञासुओं के लिए अवलोकनीय है।

1) सभ्यता :- व्यक्ति के बाह्य रहन-सहन, वेश-भूषा आदि बाह्य जीवन-पद्धति को सामान्यत: सभ्यता कहते हैं। भारतीय संस्कृति/आत्मा/पद्धति आध्यात्मिक होने के कारण भारतीय सभ्यता आदि भी तदनुकूल होना सहज है, स्वाभाविक है। इसके साथ-साथ भारतीय भौगोलिक-पर्यावरणीय परिस्थिति के अनुसार भारतीय सभ्यता ओतप्रोत होना सहज है। परंतु अभी तो अधिकांशत: भारतीय सभ्यता विदेशी पिछलग्गु है या हीरो-हीरोइन के उपज है। अश्लील पहनाव, हिंसात्मक-भडकीला-साज-शृंगार, तामसिक-हिंसात्मक

खान-पान, दंभकारी-दिखावटी-राजसिक-फिजुलखर्ची-रहन-सहन-व्यवहार आधुनिक भारतीय सभ्यता की पहिचान है। ऐसी सभ्यता के उत्पादक-जनक-प्रचार-प्रसारक-प्रायोजक-उपभोक्ता अभी भारत के आदर्श है, अनुकरणीय है, महानायक है। इसलिए भ्रष्ट, राष्टद्रोही, मूढ नेता-अभिनेता-अभिनेत्री, सत्ता-सम्पत्ति वानों की पूजा-सत्कार, आदर-पुरस्कार, निमंत्रण, स्वागत-आवभगत समाज, राजनीति, शादी-विवाह यहाँ तक कि धार्मिक लोग, साधु-संतों एवं धार्मिक आयोजन तक में जोर-शोर से होता है। इनके बिना तो उपर्युक्त सम्पूर्ण कार्य फिके, निस्सार हो जाते हैं। इस से आज की भारत की सभ्यता का मूल्यांकन/पहिचान, दशा-दिशा का परिज्ञान सहजता से हो जाता है। इतना ही नहीं आज तो भारत में परिवार, समाज, राजनीति से लेकर धार्मिक लोग, साधु-संत तक में "**सादा जीवन उच्च विचार**" को गंवारपना, पिछडापन, अशिक्षित, गरीब की पहिचान बन गई है। धिक्कार है ऐसी भारतीय मानसिकता को ! इससे भी और अधिक दयनीय, शोचनीय, घृणीत, क्रूर विडम्बना तथा कटु सत्य यह है कि सादाजीवन या गरीबी का जीवन जीने वालों को आज भारत के तथाकथित सभ्य समाज, पुलिस, कानून, नेता, व्यापारी, उद्योगपती न जीने देते हैं न स्वेच्छा से शांति से मरने

देते हैं। कारण कि सादा जीवन जीने वाले या गरिबों को ये सभ्य लोग असभ्य मानकर उन्हें जीने देना नहीं चाहते हैं क्योंकि उनसे इन्हें घृणा/ग्लानी/द्वेष होता है, साथ ही साथ मरने भी नहीं देते हैं, क्योंकि इनकी संपूर्ण सभ्यता, समृद्धि, अहंवृत्ति, दिखावटी तो उन सादाजीवी या गरिबों के कारण है। उनके बिना यह सब संभव नहीं है। उनके शोषण से ये समृद्ध है और उनको अपना अहंकार एवं दिखावा दिखाकर मृषानंदी, चौर्यानंदी, परिग्रहानंदी रूपी निष्ठूर-क्रूर आनंद अनुभव करते हैं, नहीं तो भारत में धनी, व्यापारी, नेता से अभिनेता के घरों से लेकर सरकारी गोदामों में अनाज सढते हैं तो इधर लाखों लोग पेट की आग से जलते हैं, मरते हैं। इसी प्रकार वस्त्र, मकान, शिक्षा, औषधि, चिकित्सा, स्वास्थ्य, पानी, सुरक्षा, न्याय, अधिकार, मान-सम्मान आदि के बारे में भी जान लेना चाहिए। आज पाश्चात्य देशों में भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, वैज्ञानिक मानकर अपना रहे हैं एवं अपनी असभ्यता को त्यागकर रहे हैं परंतु भारतीय लोग है जो कि उनके त्यागी हुई वस्तु/झुटन/ Use and through को चाव से ग्रहण कर रहे हैं।

2) करुणा, भद्रता, शिष्ठता, नैतिकता - जिस भारतीय संस्कृति में **''वसुधैव कुटुम्बकम्'' ''परस्परोपग्रहो**

जीवानाम्'' ''मातृदेवोभव:, पितृदेवो भव:, अतिथिदेव भव:, जीव ही जिनवर, आत्मा ही परमात्मा मानकर सूक्ष्मातिसूक्ष्म निम्नस्तरीय जीव से लेकर वृक्ष, कीट-पतंग, पशु-पक्षी-मनुष्य आदि प्रत्येक जीव से दया, करुणा, प्रेम, मैत्री, प्रमोद, समता, भद्रता, शिष्ठता, नैतिकता का व्यहवार करने के लिए बल दिया गया है आज उस भारत में करुणा आदि की करुणीय/दयनीय दशा है। वे वृक्ष आदि के प्रति क्या करुणा, भद्रता आदि का व्यवहार करेंगे जो पशु-पक्षी, मनुष्य यहाँ तक कि अपने माता-पिता-संतान तथा गुणीजन-गुरुजन के प्रति भी करुणा, भद्रता, शिष्ठता, नैतिकता का व्यहवहार नहीं करते हैं। जब कि माता-पिता, गुणीजन-गुरुजन को तो स्वर्ग से भी महान् तथा भगवान् से भी श्रेष्ठ मानकर उनकी सेवा पूजा, प्रशंसा आदि करना चाहिए। आज भारत के तथाकथित सभ्य शिक्षित, आधुनिक, धार्मिक, प्रगतिशील व्यक्ति पुलिस, कानून, प्रशासक, नेता आदि की पहिचान ही निष्ठुरता, स्वार्थपरता, निर्दयता, अभद्रता, उदण्डता, स्वच्छन्दता, अनैतिकता आदि बन गई है। इससे विपरीत दयालु, भद्र, सरल, शिष्ठ, नैतिक, व्यवहार को मूर्ख, गंवार, गरीब, अशिक्षित, दुर्बल, असहाय, दीन-हीन, नौकर, पीछडे व्यक्तियों की मजबुरी रूप में मान्यता प्राप्त होती जा रही है। उन्हें

''मजबुरी का नाम महात्मा गांधी'' मानकर शोषित, पददलीत, अपमानीत कर रहे हैं। आज पाश्चात्य देश में पशु-पक्षी, कुत्ता-बिल्ली, सर्प, सुअर आदि के प्रति जो दया-करुणा-सुरक्षा-सेवा आदि के भाव एवं व्यवहार है आज वैसा व्यवहार भारत में निर्दोष, उपकारी पशु-पक्षी-गाय-भैंस, माता-पिता, गुणीजन-गुरुजन प्रति भी कम पाया जाता है। केवल कम ही नहीं उनके प्रति क्रूरता का व्यवहार किया जाता है, यहाँ तक कि कानूनत: उनकी निर्मम हत्या की जाती है, उनके मांस आदि विदेश तक में बेचा जाता है। जिस भारत के पूर्व सपुतों ने विदेश तथा विश्व के लिए दया, करुणा आदि का निशुल्क निर्यात किया आज उसके कुपुत मांस, भ्रष्टाचार, अश्लीलता आदि का विक्रय विदेश तक में कर रहे हैं। ऐसे कुपुतों के लिए तो -

जननी जने तो ऐसे नर के दानी के सूर।
नहीं तो बांझ रहे काहे गँवावे नूर॥
जिनको न निज गौरव न निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा और मृतक समान है ॥

आज पाश्चात्य देश से करुणा, भद्रता, शिष्ठता, नैतिकता का प्रयोग खान-पान, वेश-भूषा, शिक्षा, कानून, राजनीति यहाँ तक कि व्यापार-उद्योग में कर रहे हैं तो आज भारत में इन सब का बहिष्कार

सर्वत्र हो रहा है।

3) पवित्रता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति :- आत्मा के शुद्ध, स्वाभाविक गुण-धर्म ही यथार्थ से पवित्रता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति है। आत्मा के शुद्ध, स्वाभाविक गुण-धर्म है अनंत अहिंसा, सत्य, निर्मलता, सहज-सरलता, विज्ञानधन स्वरूप नित्यानंद रूप, सच्चिदानंद, ''सत्यं शिवं सुंदरम्'' संकल्प-विकल्प से शून्य, कषाय से निर्मुक्त, वितरागता, वितद्वेष, परममाध्यस्थ, परम समरसीभाव आदि आदि। इन गुण धर्म से सहित या इनके लिए जो भाव व्यवहार होता है वह ही पवित्रता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति है तथा इन गुण-धर्म से रहित होकर या इसके लक्ष्य बिना कोई भी भाव-व्यवहार कदापि, कथञ्चित् भी पवित्र, धार्मिक, आध्यात्मिक, संस्कृति हो ही नहीं सकती है। भले उसे कोई भी, कभी भी, किसी भी धर्म, संस्कृति आदि के नाम से डंका भी क्यों न बजाए। आज भारत के सामान्य जन ही नहीं स्वयं को सच्चा धार्मिक मानने वाले, जताने वाले सामान्य गृहस्थों से लेकर साधु-संतों में भी ईर्ष्या-द्वेष, लोभ-मोह, तेरा-मेरा, ममता-विषमता, फूट-लूट, शोषण-परिग्रह, दंभ-दिखावा, घृणा-विद्रोह, भावहिंसा-द्रव्यहिंसा आदि भाव एवं व्यवहार करते रहते हैं। इससे वे अपनी

श्रेष्ठता, ज्येष्ठता, गुणवत्ता, विशेषता, धार्मिकता, पवित्रता, आध्यात्मिकता, संस्कृति का मूल्यांकन करते रहते हैं। अर्थात् जितने-जितने अंश में वे ईर्ष्या-द्वेषादि को अधिक से अधिक अपनाते हैं वे स्वयं को उतना ही अधिक से अधिक धार्मिक, आध्यात्मिक मानते हैं, जताते हैं, बताते हैं। इतना ही नहीं जिनके भाव एवं व्यवहार पवित्र, सरल-सहज है उसे तो भोंदु, कायर, दुर्बल, दीन-हीन, असहाय, बेचारा, गरीब, नौकर, अशिक्षित, पीछडा, असामाजिक, असभ्य, अधार्मिक, अपसंस्कृत मानते हैं, बताते हैं और उससे दुर्व्यवहार करते हैं। आज पाश्चात्य जगत में भारतीय संस्कृति को आदर सत्कार, बहुमान मिल रहा है तो भारत में उसको अनादर, अपमान, बहिष्कार की पीडा झेलनी पड रही है। आज भारत में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति केवल दिखावा, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि, ख्याति, पूजा, लाभ का विषय बनता जा रहा है। अपने रीति-रिवाज, पूजा-पाठ, परम्परा, बाह्य-क्रिया-काण्ड, आडंबरपूर्ण धार्मिक आयोजन, प्रवचन-कथावाचन, तीर्थ यात्रा, मंदिर-मूर्ति-धर्मशाला-आराधनास्थलादि निर्माण या कुछ नाच-गान-वेश-भूषा-भाषण-प्रतियोगिता, संगोष्ठी-शिविर, शोभायात्रादि का आयोजन करना ही व्यक्ति से लेकर समाज, धार्मिक-पंथ-मत, संगठन, स्कूल,

विश्वविद्यालय, सरकार यहाँ तक कि साधु-संतों की धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति रह गई है इसलिए तो विश्वगुरु भारत आज भ्रष्टाचार, जनसंख्या वृद्धि, गंदगी, फैशन-व्यसन, हिंसा, आतंकवाद, दिखावा, मिलावट अन्धानुकरण आदि में प्रथम स्थान प्राप्त करने की होड में है। अभी समय आ गया है कि भारत को अपनी महान् आध्यात्मिक संस्कृति रूपी सुसुप्त जड को सिंचन, सुदृढ करते हुए आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, नीति-नियम-कानून, राजनीति रूपी प्राणवायु एवं सूर्य रश्मि से तत्त्व ग्रहण करते हुए विशाल, समृद्ध प्रगतिशील, आधुनिक, सुसभ्य, सुसंस्कृत, आध्यात्मिक महान् राष्ट्र बनाना है। इसके लिए हमारे भारत के पास अतीत की समृद्ध धरोहर है तो वर्तमान के शिक्षित प्रचुर जनसंख्या, विशाल लोकतंत्रात्मक राष्ट्र एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान-शिक्षा-उपकरण उपलब्ध है। केवल आवश्यकता है इन सब का समयोचित सही उपयोग। सबसे महत्वपूर्ण विषय यह है कि जिस प्रकार जीवात्मा के बिना शरीर की वृद्धि, गुणवत्ता, सक्रियता संभव नहीं है उसी प्रकार धन-जन-शिक्षा-सभ्यता, ज्ञान-विज्ञान, परम्परा, धर्म आदि पवित्रता, धार्मिकता, आध्यात्मिकता, संस्कृति के बिना शव समान है तो पवित्रता आदि से युक्त वे सब मंगलमय, विकासकारी, गुणकारी ग्रहणीय है।

5) भारत की दिशा-दशा-आशा 2015

अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान के सत्पुरुषार्थ के माध्यम से भविष्य को आदर्श, उन्नत, सुख-शांति से सम्पन्न बनाना प्रत्येक सुखेच्छुक मनुष्य का उद्देश्य होता है। भूत के कर्तव्य/कर्म/भाव/संस्कार रूपी बीज से वर्तमान रूपी भाव/पुरुषार्थ अङ्कुर बनता है जिससे भविष्य में फल प्राप्त होता है। अर्थात् भूत का पुरुषार्थ/कार्य ही वर्तमान का भाग्य है और वर्तमान का पुरुषार्थ ही भावी-भाग्य है। यह कार्यकारण सिद्धान्त व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र से लेकर विश्व तक में कार्य करता है। इस दृष्टि से हमें संदर्भ विषय में भी देखना चाहिए और तत् संबंधी विचार/निर्णय/अनुमान/गणित करना चाहिए। वैसे तो उसका सम्पूर्ण सत्य तथ्य परक निर्णय सर्वज्ञ कर सकते हैं तो कुछ अंश में मन:पर्यय ज्ञानी, अवधिज्ञानी, अष्टांग निमित्त ऋद्धि सम्पन्न मुनि भी कर सकते हैं। हम छद्मस्थ/अल्पज्ञ इसका पूर्ण सही निर्णय नहीं कर सकते हैं तथापि आगम, अनुमान, कार्य कारण सिद्धान्त, कर्म सिद्धान्त, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव रूपी चतु:आयाम सिद्धान्त के माध्यम से अनुभव, स्वप्न, शकुन के आधार पर तथा वैश्विक परिदृश्य से यत्किञ्चित् कल्पना/

विचार मैं इस निबन्ध में प्रस्तुत कर रहा हूँ। विशेष जिज्ञासु मेरी (आ. कनकनंदी) 1) भारत को गारत तथा महान् भारत बनाने के सूत्र 2) भारत के सर्वोदय के उपाय 3) भारत को पुन: विश्वगुरु बनाने के लिए समग्र क्रांति चाहिए आदि कृतियों का अध्ययन करें। सुनिश्चित् लक्ष्य निर्धारण पूर्वक तदनुकूल पुरुषार्थ से ही हम उस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।अत: भविष्य का लक्ष्य निर्धारण हमारी प्रथम आवश्यकता है। वैसे तो प्रत्येक जीव का परम अन्तिम लक्ष्य स्वात्मा का परम सार्वभौम, अनन्त, अक्षय विकास स्वरूप परिनिर्माण/मोक्ष/स्वात्मोपलब्धि है। इस परम लक्ष्य को केंद्र में करते हुए जो कुछ कार्य किया जाता है, उससे मोक्ष प्राप्ति के पहले-पहले सांसारिक वैभव, सुख, प्रसिद्धि, विकास आदि प्राप्त होना स्वाभाविक है। क्योंकि बडी संख्या में छोटी संख्या, लम्बी दूरी में छोटी दूरी, बडा आकार में छोटा आकार, बडे छेद में छोटा छेद स्वाभाविक रूप से अन्तर्निहित है। बडी दूरी को पार करने से पहले छोटी दूरी को पार करना स्वाभाविक हो जाता है। इसलिए कहा है- **'यस्मात् अभ्युदय निश्रेयस्य सिद्धि: स धर्म:'**। जिससे स्वर्गादि का अभ्युदय सुख एवं निर्वाण रूपी परम सुख की सिद्धि होती है, उसको धर्म कहते हैं।

धर्म:सर्व सुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नम: ॥

धर्म शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक सुख को देने वाला है तथा सम्पूर्ण प्रकार के हित को करने वाला है। धर्म से ही शाश्वतिक (शिव) मोक्ष सुख प्राप्त होता है इसलिए धर्म को नमन करता हूँ। यथार्थ धर्म के परिपालन से उपर्युक्त समस्त सुख प्राप्त होते हैं परंतु केवल सांसारिक, लौकिक, भौतिक सुख के लिए धर्म का सेवन करना भी पतन के लिए परम्परा से कारण है। क्योंकि ऐसे दूषित संकीर्ण परिणाम से जो पापानुबंधी पुण्य बंध होता है उससे जो वैभवादि प्राप्त होते हैं उससे जीव और भी अहंकारी, धर्मद्रोही, विध्वंसकारी, आडम्बरी, फैशनी एवं व्यसनी बन जाता है। उस पुण्य से व्यक्ति भले ही सभ्य, शिक्षित, साधन सम्पन्न बन जायेगा परंतु वह साधन सम्पन्न होते हुए भी धार्मिक बनकर आध्यात्मिक, सुसंस्कृत, संस्कारवान् बनने के बदले में इन साधनों का दुरुपयोग करने वाला बन जायेगा जैसा कि रावण, कंस, हिटलर से लेकर आधुनिक अधिकांश सभ्य, शिक्षित, साधन सम्पन्न व्यक्ति करते हैं।

1) 2015 तक कुछ आर्थिक, भौतिक एवं शैक्षिक विकास की आशायें-

A. वर्तमान के वैश्विक परिदृश्य से यह आभास होता है कि विश्व के साथ-साथ भारत का विकास 2015 तक आर्थिक, शैक्षणिक, टेक्नॉलोजी, साधन सम्पन्नता में विकास होने की सम्भावना है। इसके कारण है विज्ञान, टेक्नॉलोजी के नये-नये सिद्धान्त, प्रयोग एवं अविष्कार। इसके साथ-साथ परिवहन एवं दूरसंचार व्यवस्था भी इसमें से एक कारण है। इसके कारण केवल आर्थिक विकास ही नहीं होगा परंतु शैक्षणिक विकास भी होगा। शैक्षणिक विकास के अन्य कुछ कारणों में से सरकार का प्रयास, प्रोत्साहन, सहयोग, सामाजिक-राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय डिमाण्ड के साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करना एक रुढी परम्परा, स्टेटस् सिम्बल, सामाजिक प्रतिष्ठा, नौकरी प्राप्त करने का साधन एवं शादी-विवाह, लेन-देन करने का अनिवार्य शर्त बनता जा रहा है।

B. नैतिक एवं चारित्रिक पतन की आशायें-

उपरोक्त विकास, विकास के लिए कम कारण बनेगा परंतु फैशन-व्यसन, उत्श्रृंखलता, अहंवृत्ति, अनुशासन विहीनता,

असामाजिकता, अप- संस्कृति के लिए कारण बन करके विनाश के लिए कारण बनने की अधिक संभावना है। क्योंकि वर्तमान परिस्थिति से हम कुछ भविष्य का अनुमान लगा सकते हैं। मेरे दीर्घ 45 वर्ष के 16 प्रदेशों के हजारों ग्रामों से लेकर महानगरों के लाखों व्यक्तियों के अध्ययन से जो मुझे अनुभव हुआ उसके निष्कर्ष से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि अधिकांश व्यक्ति आर्थिक, शैक्षिक एवं नगरीकरण के कारण सुसंस्कृत, संस्कारवान्, धार्मिक, आध्यात्मिक, परोपकारी कम बनते हैं, परंतु फैशन-व्यसन आदि उपरोक्त दुर्गुणों को अधिक अपनाते हैं।

2) वैज्ञानिक आध्यात्मिकता में विकास-

मेरे देश-विदेश के विभिन्न साहित्यों के अध्ययन तथा देश-विदेश के विभिन्न व्यक्तियों के सम्पर्क, चर्चा तथा शोध-बोध के आधार पर मेरा यह अनुभव है कि वर्तमान में उच्च-उदार विचार सम्पन्न, वैज्ञानिक, गणितीय बुद्धि सम्पन्न व्यक्ति सामान्य धार्मिक व्यक्ति से भी अधिक सुसंस्कृत, संस्कारवान्, उदार, प्रगतिशील, सहिष्णु आदि गुणों से युक्त होते हैं। नई पीढी में भले कुछ फैशन-व्यसन आदि की दुष्प्रवृत्ति पाई जाती है तथापि नई पीढी पूर्व पीढी से अधिक उदार, सहिष्णु और कम झगडालु है। वे धर्म, जाति,

पंथ, परम्परा को लेकर भेद-भाव, लडाई-झगडा कम करना चाहती है। इसलिए पहले जिस प्रकार पंथ, परंपरा को लेकर कटुता थी वह कटुता धीरे-धीरे कम होती जा रही है। इतना ही नहीं आज सभी साधु स्कूल, कॉलेज, विश्व विद्यालय, जेल, अन्य धर्मों के कार्यक्रमों में जाकर भाग लेते हैं एवं पर धर्मावलम्बी साधुओं को भी स्व कार्यक्रमों में सस्नेह बुलाते हैं व एक मंचपर बैठकर प्रवचनादि सम्पन्न हो रहे हैं।

उपर्युक्त अच्छाईयों की वृद्धि 2015 तक और भी अधिक होने की सम्भावना है। इतना ही नहीं भारतीय संस्कृति एक उदारवादी, अनेकान्तात्मक, सर्वजीव हितकारी, सर्वजीव सुखकारी, गाणितीय, वैज्ञानिक धर्म होने से तथा आज वैश्विक मंच भी उपर्युक्त गुणों को महत्व देने के साथ-साथ स्वीकार करने से 2015 तक भारतीय संस्कृति बहुअंश में विश्व में उदारवादी, वैज्ञानिक विचारधारा वाले व्यक्तियों में फैल जायेगी। जिसका शुभारम्भ कुछ अंश में दूसरों ने भी किया है और मैं भी कुछ अंशों में प्रायोगिक रूप में कर रहा हूँ।

3) शिक्षा चारित्र आदि में परिवर्तन की सम्भावना

कटु अनुभव एवं वैज्ञानिक शोध-बोध-आविष्कार के

कारण शिक्षा, चारित्र आदि में परिवर्तन की सम्भावना है जिसका शुभारम्भ हो गया है भले उसकी परिस्थिति नगाडे की आवाज में तुती जैसी है। वर्तमान की शिक्षा मैकाले की शिक्षा पद्धति से दिग्भ्रमित है तथा भारतीयों के आचरण पाश्चात्य अन्धानुकरण के साथ-साथ हीरो-हीरोइन की अप-संस्कृति से विकृत है परंतु निष्पक्ष, सत्यग्राही वैज्ञानिक अनुसंधान से भारतीय शिक्षा, संस्कृति, परम्परा, भोजन, भाषा, परिधान आदि श्रेष्ठ सिद्ध होता जा रहा है। इसी से भारत की शिक्षा एवं आचरण में परिवर्तन अभी प्रबुद्ध वैज्ञानिक, प्रगतिशील विचार सम्पन्न भारतीयों में हो रहा है; उनकी भारतीय पूर्व शिक्षा, संस्कृति, भाषा आदि के प्रति आस्था बढती जा रही है और इस के वृद्धि की पूर्ण सम्भावना है क्योंकि इसका सुपरिणाम भी प्राप्त होता जा रहा है। यथा - योग (ध्यान), शाकाहार, प्रार्थना, परोपकार, अहिंसा (पर्यावरण की सुरक्षा), सुती वस्त्र, भारतीय भोजन, भारतीय भाषा यथा- संस्कृत, प्राकृत आदि, प्राकृतिक संसाधन सामग्री (हर्बल), घर का शुद्ध देशी भोजन, भारतीय सामाजिकता, संयुक्त परिवार, अतिथि सत्कार, आयुर्वेद, सेवाभाव, आध्यात्मिकता आदि आदि।

मेरा अनुभव है कि वर्तमान में कुछ बुराई के लिए आधुनिक

शिक्षा एवं विज्ञान उत्तरदायी है तो उपर्युक्त अच्छाइयों के लिए भी आधुनिक शिक्षा एवं विशेषत: विज्ञान उत्तरदायी है। वैज्ञानिक अनुसंधानों से संकीर्णता, रुढीवादीता, अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरता, धर्म के नाम पर हिंसा, अन्याय, अत्याचार, शोषण, बलात्कार आदि घटते जा रहे हैं। क्योंकि वैज्ञानिक अनुसंधानों से कार्यकारण सिद्धान्त, अनेकान्त सिद्धान्त, पारिस्थितिकी, पर्यावरण सुरक्षा के सूत्र प्राप्त हुए जिससे उपर्युक्त अच्छाइयों के साथ-साथ वैज्ञानिक उपकरणों से 2015 तक और भी अधिक प्रदूषण, हत्या, युद्ध, आतङ्कवाद, भ्रष्टाचार, बलात्कारादि बढने की सम्भावना है यदि नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास वैज्ञानिक उपकरण के विकास के साथ-साथ समानुपात में ना हो या अधिक न हो तब। इस आध्यात्मिक एवं नैतिक विकास के लिए भारतीय संस्कृति और उसमें से फिर जैन संस्कृति का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है और होना चाहिए। इसके लिए हमें स्वयं नैतिक, आध्यात्मिक, सहिष्णु, उदारवादी, संगठन प्रेमी होना पडेगा। क्योंकि महावीर भगवान् ने कहा है-

आदहिदंकादम्वं यदिचेत् परहिद कादवम्।
आदहिद परहिदादो आदहिदं सुट्ठुकादवम् ॥

अर्थात् पहले आत्महित करना चाहिए। आत्महित के साथ-साथ परहित करना चाहिए। परंतु इन दोनों में से पहले आत्महित करना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार जो दीपक स्वयं प्रकाशित होता है वह दूसरों को प्रकाशित करता है और दूसरे दीपकों को प्रज्ज्वलित कर सकता है। बुझा हुआ दीपक न दूसरों को प्रकाशित कर सकता है और न दूसरे दीपक को प्रज्ज्वलित कर सकता है। इस दृष्टि से सबसे पहले भारतीयों को स्वसंस्कृति का ज्ञान, स्वाभिमान, आचरण करना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। किंतु वर्तमान का प्रायोगिक अनुभव है कि अधिकांश भारतीय लोग न तो स्वयं स्व-धर्म ग्रंथों को पढते हैं और न स्व-बच्चों को एवं परिवार को पढाते हैं। लौकिक शिक्षा, अंग्रेजी की शिक्षा स्वयं प्राप्त करते हैं एवं बच्चों के लिए लाखों रूपया खर्च करके देश-विदेश में शिक्षा प्रदान कराते हैं। वह भी मुख्यत: वाणिज्यिक, व्यवसायिक शिक्षा जो अर्थोपार्जन व नौकरी के लिए सहकारी हो। आधुनिक विज्ञान व गणित की शिक्षा भी कम प्राप्त करते हैं। इसलिए 2015 तक भारतीयों को श्रेष्ठ, ज्येष्ठ सम्पन्न बनने के लिए स्व-धर्म, संस्कृति के अध्ययन के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान एवं गणित का अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि

आधुनिक विज्ञान प्राय: भारतीय संस्कृति, सिद्धान्तों के अनुसार आगे बढ रहा है। प्रकारान्तर से आधुनिक विज्ञान भारतीय संस्कृति को प्रायोगिक, वैज्ञानिक, वैश्विक रूप प्रदान कर रहा है। और भी एक महत्वपूर्ण कार्य भारतीयों को करना चाहिए वह यह है कि - स्व-अनेकान्त सिद्धान्त, स्याद्वाद पद्धति, शाकाहार, निर्व्यसन, विश्वमैत्री, विश्वप्रेम, साधर्मीवात्सल्य, स्व-पर प्रभावना, उपगूहन, स्थितिकरण आदि सिद्धान्तों को स्वीकार करना केवल आवश्यक ही नहीं किंतु अनिवार्य भी है। इसके आधार पर ही 2015 का विनाश या विकास आधारित है।